

पाठ 6 मंगलेश डबराल

"मंगलेश डबराल" का जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान

जीवन परिचय:

मंगलेश डबराल (16 मई 1948 – 9 दिसंबर 2020) हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि, पत्रकार और अनुवादक थे। उनका जन्म उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले के काफलपानी गाँव में हुआ था। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और बाद में पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। वे जनसत्ता, अमर उजाला, हिंदुस्तान जैसे प्रमुख समाचार पत्रों से जुड़े रहे।

डबराल ने अपने जीवन में साहित्य और पत्रकारिता के बीच एक सशक्त सेतु बनाया। उनकी कविताएँ समकालीन हिंदी कविता में एक नई भाषा और दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती हैं।

साहित्यिक योगदान

मंगलेश डबराल की कविताएँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों को गहराई से व्यक्त करती हैं। उनकी भाषा सरल, मर्मस्पर्शी और प्रतीकात्मक है।

प्रमुख कृतियाँ

1. कविता संग्रह:

- *हम जो देखते हैं* (1980)
- *घर का रास्ता* (1986)
- *नये युग में शत्रु* (1997)
- *आवाज भी एक जगह है* (2010)

2. गद्य एवं आलोचना:

- *लेखक की रोटी* (2002) – निबंध संग्रह
- *कवि का अकेलापन* (2005) – साहित्यिक विचार

3. अनुवाद कार्य:

- उन्होंने पाब्लो नेरुदा, बर्टोल्ट ब्रेख्त, नाजिम हिकमत जैसे विश्व कवियों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया।

साहित्यिक विशेषताएँ

- उनकी कविताओं में गाँव-शहर का द्वंद्व, प्रकृति और आधुनिकता का संघर्ष, सामाजिक न्याय और मानवीय संवेदना के स्वर मुखर हैं।
- उन्होंने नई कविता और समकालीन काव्यधारा को समृद्ध किया।
- उनकी रचनाएँ सामाजिक यथार्थ और व्यक्तिगत अनुभूति का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती हैं।

पुरस्कार एवं सम्मान

- साहित्य अकादमी पुरस्कार (2010) – *आवाज भी एक जगह है* के लिए
- शमशेर सम्मान
- पहल सम्मान

निधन:

9 दिसंबर 2020 को नई दिल्ली में उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी कविताएँ आज भी पाठकों के बीच जीवित हैं।

मंगलेश डबराल ने हिंदी साहित्य को एक नई दृष्टि दी और अपनी मौलिक अभिव्यक्ति से समकालीन कविता को समृद्ध बनाया।

प्रश्न – अभ्यास

प्रश्न 1. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों को ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर 1:

- कवि संगतकार के माध्यम से उन व्यक्तियों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जो किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की सफलता में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- ये लोग पर्दे के पीछे रहकर उनकी मदद करते हैं और विभिन्न तरीकों से सहयोग देकर उनकी सफलता सुनिश्चित करते हैं, लेकिन उनकी पहचान या प्रशंसा नहीं होती।

प्रश्न 2. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर 2:

- संगतकार जैसे व्यक्तित्व केवल संगीत तक सीमित नहीं रहते, बल्कि कई अन्य क्षेत्रों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

- वे अक्सर फिल्मों, टेलीविज़न, खेल, राजनीति, कला और अन्य रचनात्मक एवं सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय दिखाई देते हैं।

प्रश्न 3. संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तर 3: संगतकार मुख्य गायक या गायिका का विभिन्न रूपों में सहारा बनते हैं। उनके योगदान निम्नलिखित हैं:

- स्वर सामंजस्य: संगतकार अपने स्वर को मुख्य गायक-गायिका के ऊँचे स्वर के साथ जोड़कर गीत की मधुरता बनाए रखते हैं।
- संगीत संतुलन: जब गायक या गायिका अंतरे की जटिल तानों में रम जाते हैं, संगतकार स्थायी का गायन जारी रखते हैं ताकि गीत का प्रवाह बना रहे।
- सुर सुधार: यदि गायक या गायिका सुर से भटक जाएं, तो संगतकार स्थायी के माध्यम से उन्हें सही सुर में वापस लाने का काम करते हैं।
- तार सप्तक में मदद: जब गायक-गायिका का स्वर तार सप्तक में धीमा पड़ने लगता है, तो संगतकार अपने मद्धिम स्वर से उन्हें सहारा देते हैं।
- भावनात्मक सहारा: संगतकार गायक-गायिका के अकेलेपन के एहसास को दूर करते हैं और उन्हें आत्मविश्वास प्रदान करते हैं।
- गीत की समग्रता: गायक-गायिका द्वारा छोड़े गए गीत के किसी भी भाग को संगतकार अपने स्वर से पूरा करते हैं, जिससे प्रस्तुति में कोई कमी न रह जाए।

इस प्रकार, संगतकार मुख्य गायक-गायिका के प्रदर्शन को न केवल मजबूत करते हैं, बल्कि उनके गीत को उत्कृष्ट बनाने में भी मदद करते हैं।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है

या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है

उसे विफलता नहीं

उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

उत्तर 4: भाव:

कवि कहना चाहता है कि संगतकार की आवाज़ में जो झिझक या संकोच महसूस होता है, वह उसकी कमजोरी या असफलता नहीं है। उसके स्वर को ऊँचा न उठाने का प्रयास भी उसकी गहरी समझ और संवेदनशीलता को

दर्शाता है। यह उसकी इंसानियत का परिचायक है, जिसमें वह गायक की श्रेष्ठता और गरिमा को बनाए रखने का ईमानदार प्रयास करता है।

प्रश्न 5. किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाले लोगों को अनेक लोग तरह-तरह से अपना योगदान देते हैं। कोई एक उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर 5: किसी भी व्यक्ति की सफलता के पीछे अनेक लोगों की मेहनत और सहयोग छिपा होता है। यह योगदान उस व्यक्ति को प्रसिद्धि तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उदाहरण के तौर पर:

फिल्म उद्योग में अभिनेता या अभिनेत्री की सफलता का आधार केवल उनकी व्यक्तिगत मेहनत नहीं होती, बल्कि उसमें कई अन्य लोगों का योगदान सम्मिलित रहता है।

1. मेकअप आर्टिस्ट और ड्रेस डिजाइनर: वे कलाकार के लुक को प्रभावशाली बनाने में मदद करते हैं।
2. निर्देशक और लेखक: निर्देशक फिल्म को सही दिशा में ले जाते हैं, जबकि संवाद और पटकथा लेखक कहानी को जीवंत बनाते हैं।
3. कोरियोग्राफर और स्टंटमैन: कोरियोग्राफर कलाकार के नृत्य को उत्कृष्ट बनाते हैं, वहीं स्टंटमैन खतरनाक दृश्यों को अंजाम देते हैं।
4. कैमरामैन और एडिटर: ये लोग फिल्म को आकर्षक और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
5. व्यक्तिगत सहायक: कलाकार की दैनिक जरूरतों और शेड्यूल को संभालने में उनका सहयोग करते हैं।

निष्कर्ष:

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए केवल व्यक्तिगत प्रयास ही नहीं, बल्कि अनेक लोगों का सहयोग और योगदान आवश्यक होता है। सफलता हमेशा सामूहिक प्रयास का परिणाम होती है।

प्रश्न 6. कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नज़र आता है उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है। इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 6:

1. गायक की सहायता:
जब गायक तारसप्तक में गाते समय अत्यधिक ऊँचाई पर पहुँचता है, तो कभी-कभी उसका स्वर नियंत्रण खोने लगता है। ऐसी स्थिति में संगतकार अपने कुशल सुरों से गायक की आवाज़ की रिक्तता को भरता है।

2. संगतकार की विशेषता:

संगतकार का काम केवल संगीत का साथ देना नहीं, बल्कि गायक की अस्थिरता को संभालना और प्रस्तुति को सुगम बनाए रखना होता है।

3. गायक की गरिमा बनाए रखना:

संगतकार अपनी कला के माध्यम से गायक की कमियों को ढक देता है, जिससे प्रस्तुति में कोई कमी नज़र नहीं आती और गायक की प्रतिष्ठा बनी रहती है।

4. कलात्मक सामंजस्य:

संगतकार और गायक के बीच का तालमेल संगीत की प्रस्तुति को प्रभावशाली बनाता है। गायक की सफलता में संगतकार का योगदान अद्वितीय होता है।

5. महत्वपूर्ण भूमिका:

संगतकार एक अनदेखा नायक होता है, जो गायक की प्रस्तुति को उत्कृष्ट बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसकी कला गायक के लिए एक अनिवार्य सहारा होती है।

प्रश्न 7. सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाते हैं तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

उत्तर 7-

- सफलता के शिखर पर पहुँचने के दौरान कई बार ऐसे हालात बनते हैं जब व्यक्ति असफलता या उम्मीद से कम प्रदर्शन के कारण हताश महसूस करता है। कभी वह अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सक्षम नहीं होता, तो कभी अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद उसे उचित पहचान नहीं मिलती।
- ऐसे समय में सहयोगी उसकी हिम्मत बढ़ाने और सहारा देने का काम करते हैं। वे न केवल उसकी कमियों को सुधारने में मदद करते हैं, बल्कि उसके आत्मविश्वास को भी मजबूत बनाते हैं। इससे व्यक्ति दोबारा अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित होता है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 8. कल्पना कीजिए कि आपको किसी संगीत या नृत्य समारोह का कार्यक्रम प्रस्तुत करना है लेकिन आपके सहयोगी कलाकार किसी कारणवश नहीं पहुँच पाएँ-

(क) ऐसे में अपनी स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर 8: (क) उस समय मेरी चिंता स्वाभाविक रूप से बढ़ जाएगी। मेरे मन में यह जानने की बेचैनी होगी कि मेरे साथी कलाकार अब तक क्यों नहीं पहुँचे। मैं यह सोचने में व्यस्त रहूँगा कि वे कितनी जल्दी आ सकते हैं। यदि उनके आने की कोई संभावना न हो, तो मैं उनके स्थान पर किसी अन्य व्यवस्था करने का प्रयास करूँगा। इस दौरान मेरी व्याकुलता बनी रहेगी और मैं लगातार इस समस्या का समाधान खोजने के लिए गहराई से विचार करता रहूँगा।

(ख) ऐसी परिस्थिति का आप कैसे सामना करेंगे?

उत्तर 8-(ख) ऐसी स्थिति में, मैं आयोजकों को अपनी स्थिति और विवशता स्पष्ट रूप से बताऊँगा और उनसे अनुरोध करूँगा कि वे स्थानीय कलाकारों, वादकों और गायकों की व्यवस्था करने में मेरी मदद करें। यदि यह संभव नहीं हो पाता, तो मैं अपने प्रदर्शन के लिए ऐसे गीतों या नृत्य कार्यक्रमों का चयन करूँगा, जिनमें वाद्ययंत्रों की विशेष आवश्यकता न हो। इस स्थिति में, मैं अपनी प्रतिभा और कौशल का उपयोग करते हुए, बिना वाद्ययंत्रों के भी दर्शकों का मनोरंजन करने का भरपूर प्रयास करूँगा।

प्रश्न 9. आपके विद्यालय में मनाए जाने वाले सांस्कृतिक समारोह में मंच के पीछे काम करने वाले सहयोगियों की भूमिका पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर 9- विद्यालय के सांस्कृतिक समारोह में मंच के पीछे काम करने वाले सहयोगियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे कार्यक्रम की सफलता में चुपचाप योगदान देते हैं, लेकिन उनका कार्य बिना किसी विघ्न के कार्यक्रम के संचालन के लिए अनिवार्य होता है। इन सहयोगियों में तकनीकी टीम, सजावट की टीम, संगीत संयोजन और मंच व्यवस्थापक शामिल होते हैं।

तकनीकी टीम कार्यक्रम के दौरान ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखती है, ताकि हर प्रस्तुति स्पष्ट और प्रभावी रूप से प्रस्तुत हो सके। सजावट की टीम मंच और अन्य स्थानों को सजाती है, ताकि कार्यक्रम का वातावरण आकर्षक और उत्साहपूर्ण हो। मंच व्यवस्थापक कलाकारों और प्रस्तुतकर्ताओं की समयानुसार व्यवस्था करते हैं, ताकि कार्यक्रम बिना किसी रुकावट के सुचारु रूप से चल सके। इसके अलावा, इन सहयोगियों का मानसिक दबाव और जिम्मेदारी भी अधिक होती है क्योंकि वे दर्शकों के सामने नहीं होते, फिर भी कार्यक्रम की सफलता में उनका योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

इस प्रकार, मंच के पीछे काम करने वाले सहयोगी बिना किसी पुरस्कार या प्रशंसा की चाह के अपने कार्य को पूरी निष्ठा से करते हैं, और उनकी मेहनत ही समारोह की सफलता का आधार बनती है।

प्रश्न 10. किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर क्यों नहीं पहुँच पाते होंगे ?

उत्तर 10:

- किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति में रहने वाले लोग अत्यधिक प्रतिभाशाली होते हैं, फिर भी वे मुख्य या शीर्ष स्थान पर नहीं पहुँच पाते। इसका मुख्य कारण यह है कि वे अक्सर किसी बड़े कलाकार या प्रमुख व्यक्ति के सहयोगी होते हैं, जिससे उन्हें अपनी कला को स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत करने का मौका कम मिलता है।
- उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं होती कि वे अपने स्वयं के समूह का गठन करने के लिए आवश्यक संसाधन जुटा सकें।
- हालांकि वे प्रतिभाशाली होते हैं, लेकिन उन्हें सही पहचान और प्रसिद्धि नहीं मिल पाती, जिससे उन्हें अपनी कला दिखाने के लिए पर्याप्त मंच नहीं मिल पाता।

पाठेतर सक्रियता

• आप फ़िल्में तो देखते होंगे। अपनी पसंद की किसी एक फ़िल्म के आधार पर लिखिए कि उस फ़िल्म की सफलता में अभिनय करने वाले कलाकारों के अतिरिक्त और किन-किन लोगों का योगदान रहा।

उत्तर - यह सवाल हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के कामकाजी पहलुओं को समझने के लिए है। एक उदाहरण के तौर पर हम "दंगल" फिल्म को ले सकते हैं, जो भारत में बहुत बड़ी हिट रही थी। इस फिल्म की सफलता में केवल अभिनेता-अभिनेत्रियों का योगदान नहीं था, बल्कि कई और महत्वपूर्ण लोगों ने भी योगदान दिया था।

1. निर्देशक (Director) - नितेश तिवारी ने फिल्म की कहानी को जीवंत किया। उनकी दिशा और दृष्टिकोण ने फिल्म को असाधारण बना दिया। उन्होंने फिल्म के सभी पहलुओं को बहुत अच्छी तरह से संभाला और दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ लिया।
2. लेखक (Writer) - शहनवाज प्रधान और नितेश तिवारी के लेखन ने फिल्म की कहानी को सशक्त और प्रेरणादायक बनाया। उन्होंने द्रोणाचार्य के जीवन से प्रेरित एक दिलचस्प और प्रेरणादायक कहानी को तैयार किया।
3. संगीतकार (Music Composer) - अम्जद-नदीम और पार्श्व गायकों ने संगीत और गीतों के जरिए फिल्म में जोश और उत्साह भरा। संगीत ने दर्शकों के दिलों को छुआ, जैसे "धाकड़" और "नहीं तकदीर" जैसे गाने।
4. संपादक (Editor) - नितिन चौधरी ने फिल्म के संपादन में अपनी भूमिका निभाई। उनके संपादन ने फिल्म को तेज़ रफ्तार, लय और मनोरंजन से भरपूर बना दिया।
5. कैमरा और सिनेमैटोग्राफर (Cinematographer) - सागर देसाई ने फिल्म की शूटिंग की, जो एकदम सटीक थी। उनकी तकनीकी महारत ने फिल्म के दृश्य को वास्तविकता के करीब बनाया और दर्शकों को मैदान में महसूस कराया।
6. प्रोडक्शन डिजाइन (Production Design) - मनोज वर्मा और उनकी टीम ने सेट डिजाइन और लोकेशन को फिल्म के अनुसार उचित रूप से तैयार किया, ताकि दर्शक फिल्म के काल और स्थान में खो सकें।
7. कास्टिंग निर्देशक (Casting Director) - विकास गौरी ने सही कलाकारों का चयन किया, जैसे आमिर खान, फातिमा सना शेख, और साक्षी तंवर ने अपनी भूमिकाओं को बखूबी निभाया। उनके द्वारा चुने गए कलाकारों ने फिल्म को वास्तविकता के करीब लाया।

इन सभी लोगों का योगदान था जिसने "दंगल" को एक बेहतरीन फिल्म बना दिया। फिल्म की सफलता में केवल कलाकार ही नहीं, बल्कि पूरी टीम का सामूहिक प्रयास था।

• आपके विद्यालय में किसी प्रसिद्ध गायिका की गीत प्रस्तुति का आयोजन है-

(क) इस संबंध पर सूचना पट्ट के लिए एक नोटिस तैयार कीजिए।

उत्तर (क):

नोटिस

विद्यालय में प्रसिद्ध गायिका की गीत प्रस्तुति

प्रिय छात्रों,

यह सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में एक प्रसिद्ध गायिका द्वारा गीत प्रस्तुति का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संगीत के माध्यम से छात्रों को सांस्कृतिक समृद्धि और आनंद प्रदान करना है।

तिथि: 15 दिसंबर 2024

समय: दोपहर 3:00 बजे

स्थान: विद्यालय सभा कक्ष

सभी छात्रों से अनुरोध है कि वे इस कार्यक्रम में भाग लें और गायिका के अद्भुत प्रदर्शन का आनंद लें। कृपया समय पर उपस्थित हों।

कार्यक्रम में भाग लेने के लिए छात्रों का प्रवेश मुक्त है। कृपया अपने सहपाठियों को भी इस कार्यक्रम में आमंत्रित करें।

धन्यवाद।

विद्यालय प्रमुख

(आपका विद्यालय नाम)

(ख) गायिका व उसके संगतकारों का परिचय देने के लिए आलेख (स्क्रिप्ट) तैयार कीजिए।

उत्तर-(ख) विद्यार्थी स्वयं से करें।

आलेख (स्क्रिप्ट)

सुप्रभात आदरणीय प्रधानाचार्य, शिक्षकगण, अभिभावकगण और मेरे प्रिय मित्रों,

आज हम सभी के लिए एक अत्यंत विशेष और सुखद अवसर है, क्योंकि हमारे विद्यालय में आज एक प्रसिद्ध गायिका और उनके संगतकारों की अद्भुत संगीत प्रस्तुति हो रही है। इस आयोजन के माध्यम से हम सभी को संगीत की दुनिया से जुड़ने और संगीत की सच्ची भावना का अनुभव करने का अवसर मिलेगा।

मैं आप सभी को आज की गायिका और उनके संगतकारों से परिचित कराना चाहूंगा/चाहूंगी।

हमारी प्रमुख गायिका, श्रीमती राधिका शर्मा, भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक प्रसिद्ध गायिका हैं। उनका संगीत का सफर बहुत ही प्रेरणादायक रहा है। वे अपनी आवाज़ और गायन शैली के लिए विख्यात हैं और उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया है। राधिका जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपनी माता से ली और बाद में उन्होंने प्रसिद्ध गुरुओं से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। उनके गायन में रागों का गहरा अनुभव और भावनाओं की गहरी समझ देखने को मिलती है।

आज के इस कार्यक्रम में, श्रीमती राधिका शर्मा के साथ उनके संगतकार भी होंगे। सबसे पहले, मैं श्री राजेश कुमार, जो कि एक प्रतिष्ठित तबला वादक हैं, का परिचय देना चाहता/चाहती हूँ। श्री राजेश कुमार ने कई सालों तक भारतीय शास्त्रीय संगीत की विशेषताओं को समृद्ध किया है और उनकी तबला की थाप में संगीत की गहरी ध्वनि बसी हुई है। वे राधिका जी के साथ कई मंचों पर अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं और उनकी संगत में एक अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता है।

इसके अलावा, हम आज श्री रवि कुमार, जो एक शानदार हारमोनियम वादक हैं, की संगत भी सुनेंगे। श्री रवि कुमार की हारमोनियम की धुनें हमें शास्त्रीय संगीत के सूक्ष्म आयामों से परिचित कराती हैं। वे संगीत की दुनिया में एक सम्मानित नाम हैं और उनकी हारमोनियम की आवाज़ संगीत प्रेमियों के दिलों में गहरी छाप छोड़ती है।

आइए, हम सब मिलकर इस शानदार संगीत प्रस्तुति का आनंद लें और संगीत की इस अद्भुत यात्रा में राधिका जी तथा उनके संगतकारों का स्वागत करें।

धन्यवाद!

मंगलेश डबराल की कविता "संगतकार"

"संगतकार"

वह जो

मुख्य गायक के भारी स्वर के साथ
एक कोमल, काँपती हुई आवाज़ में
मिल जाता है

वह छोटा भाई है शायद
या कोई शिष्य
या दूर से चलकर आया
रिश्ते का कोई टूटा तार

जब गायक
अंतरे के जंगल में खो जाता है
या सरगम से आगे
अनहद में भटकने लगता है
तब यही संगतकार
स्थायी को थामे रखता है

जैसे समेट रहा हो
गायक का बिखरा हुआ सामान
जैसे याद दिला रहा हो

उसके पहले गुरु के घर की
वह पहली सीख

जब थककर बैठने लगता है गला
और स्वर से
राख झरने लगती है
तब कहीं से आता है
संगतकार का स्वर
एक ढाढ़स की तरह

उसकी आवाज़ में जो हिचक है
या स्वर को पूरा न उठा पाने की
जो मजबूरी है
उसे कमी नहीं
उसकी मनुष्यता समझो

क्योंकि वही तो है
जो बताता है
अकेला नहीं है गायक
और यह कि
फिर से शुरू किया जा सकता है
बीच से ही
गाया हुआ राग

मंगलेश डबराल की कविता "संगतकार" का विश्लेषण एवं भावार्थ

कविता का सार

यह कविता एक संगीत के संदर्भ में सहयोग, विनम्रता और मानवीय संबंधों को दर्शाती है। इसमें मुख्य गायक और उसके साथ देने वाले संगतकार के बीच के रिश्ते को गहराई से चित्रित किया गया है। संगतकार का स्वर मुख्य गायक के भारी स्वर के साथ मिलकर संगीत को पूर्णता देता है, पर वह कभी मुख्य भूमिका नहीं लेता।

भावार्थ एवं विश्लेषण

1. संगतकार की भूमिका:

- कविता शुरू में ही संगतकार को "मुख्य गायक के भारी स्वर का साथ देने वाली एक कोमल, काँपती आवाज़" के रूप में चित्रित किया गया है।

- वह मुख्य गायक का छोटा भाई, शिष्य या दूर का रिश्तेदार हो सकता है, यानी वह एक सहायक की भूमिका में है।

2. संगीत में सहयोग:

- जब मुख्य गायक तानों के जटिल जंगल में खो जाता है या अनहद (अनंत) में भटकने लगता है, तब संगतकार स्थायी (मूल स्वर) को थामे रखता है।
- वह मुख्य गायक के पीछे छूटे हुए सामान को समेटता है, जैसे उसे उसके बचपन की याद दिलाता हो जब वह खुद नौसिखिया था।

3. मानवीय संवेदना:

- जब मुख्य गायक का स्वर थककर बैठने लगता है, उत्साह कम हो जाता है, तब संगतकार का स्वर उसे सहारा देता है।
- उसकी आवाज़ में हिचक या स्वर को ऊँचा न उठा पाने की कोशिश को विफलता नहीं, बल्कि उसकी मनुष्यता माना जाना चाहिए।

काव्यगत विशेषताएँ

- भाषा: सरल, प्रवाहमय और संवेदनशील।
- प्रतीकात्मकता:
 - "अनहद में भटकना" → आध्यात्मिक या कलात्मक उच्चता की खोज।
 - "स्वर में हिचक" → मानवीय कमजोरी और ईमानदारी।
- रूपक: संगीत का संदर्भ जीवन के सहयोग और विनम्रता को दर्शाता है।

सामाजिक संदेश

- यह कविता सहायकों, साथियों और गुमनाम लोगों के योगदान को महत्व देती है।
- समाज में प्रमुख लोगों के पीछे काम करने वाले लोगों की भूमिका को सम्मान देना चाहिए।
- अपूर्णता या कमजोरी को मानवीय गुण के रूप में देखना चाहिए, न कि असफलता के रूप में।

निष्कर्ष

"संगतकार" कविता मंगलेश डबराल की संवेदनशील दृष्टि को दर्शाती है। यह केवल संगीत की ही नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सहयोग और विनम्रता की महत्ता को उजागर करती है। संगतकार की आवाज़ में छिपी मानवीय ऊष्मा और समर्पण इस कविता को विशेष बनाती है।

पाठ 6 मंगलेश डबराल पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

1. सारांश संबंधी प्रश्न

प्रश्न: कविता "संगतकार" का मुख्य भाव क्या है?

उत्तर: इस कविता में मुख्य गायक और उसके सहयोगी (संगतकार) के संबंध को दर्शाया गया है। संगतकार मुख्य गायक के स्वर को संभालता है, उसकी थकान में सहारा बनता है और यह संदेश देता है कि सहयोग और विनम्रता ही सच्ची सफलता का आधार हैं।

2. पात्रों पर प्रश्न

प्रश्न: संगतकार कौन हो सकता है? कवि ने उसके किन संभावित रिश्तों की चर्चा की है?

उत्तर:

- संगतकार मुख्य गायक का छोटा भाई हो सकता है।
- वह उसका शिष्य या दूर का कोई रिश्तेदार भी हो सकता है, जो पैदल चलकर संगीत सीखने आया हो।
- कवि के अनुसार, वह प्राचीन काल से ही मुख्य गायक के साथ रहा है।

3. काव्य-शिल्प संबंधी प्रश्न

प्रश्न: कविता में "अनहद" शब्द का क्या अर्थ है? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है?

उत्तर:

- "अनहद" का अर्थ है "अनंत या दिव्य ध्वनि", जो संगीत की परम अवस्था को दर्शाती है।
- कवि ने इस शब्द का प्रयोग यह दिखाने के लिए किया है कि जब मुख्य गायक अपनी सीमाओं से आगे निकल जाता है, तब संगतकार उसे स्थिरता प्रदान करता है।

4. भाव-विचार संबंधी प्रश्न

प्रश्न: कवि ने संगतकार की आवाज़ में "हिचक" को उसकी "मनुष्यता" क्यों कहा है?

उत्तर:

- संगतकार की आवाज़ में हिचक इस बात का प्रतीक है कि वह भी एक सामान्य मनुष्य है, जिसमें कमजोरियाँ हैं।
- कवि कहता है कि इसे "विफलता" नहीं, बल्कि मानवीय सच्चाई मानना चाहिए, क्योंकि कोई भी पूर्ण नहीं होता।

5. सामाजिक संदेश संबंधी प्रश्न

प्रश्न: इस कविता से हमें समाज और जीवन के बारे में क्या सीख मिलती है?

उत्तर:

- यह कविता सिखाती है कि सफलता में सहयोगियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।
- समाज में गुमनाम लोगों के कार्यों को भी सम्मान देना चाहिए।
- अपूर्णता को स्वीकार करना मनुष्यता का गुण है।

6. तुलनात्मक प्रश्न

प्रश्न: "संगतकार" कविता में मुख्य गायक और संगतकार के संबंध को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?

उत्तर:

- मुख्य गायक प्रधान है, पर संगतकार उसका सहारा है।
- जब गायक भटक जाता है, संगतकार उसे स्थिर करता है।
- जब गायक थक जाता है, संगतकार उसे प्रेरणा देता है।
- इस प्रकार, दोनों का रिश्ता गुरु-शिष्य, भाई-भाई या मार्गदर्शक-सहयोगी का है।

7. रचनात्मक प्रश्न

प्रश्न: यदि संगतकार न हो, तो मुख्य गायक का संगीत कैसा लगेगा? कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर:

- बिना संगतकार के, मुख्य गायक का संगीत अधूरा और असंतुलित लगेगा।
- जब वह अंतरे में खो जाएगा, तो उसे सहारा देने वाला कोई नहीं होगा।
- उसकी थकान और निराशा को संभालने वाला कोई नहीं होगा।
- इस प्रकार, संगतकार संगीत की आत्मा है, न कि केवल सहायक।

8. काव्यांश विश्लेषण प्रश्न

प्रश्न: निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:

"जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन"

उत्तर:

- यहाँ संगतकार की भूमिका को सहयोगी के साथ-साथ संरक्षक के रूप में दिखाया गया है।

Ncert Solutions of पाठ 6 मंगलेश डबराल

- "पीछे छूटा सामान" प्रतीक है मुख्य गायक की भूली हुई मूल बातों का, जिन्हें संगतकार याद दिलाता है।
- "बचपन की याद" से तात्पर्य है संगीत की मूलभूत शिक्षाओं से, जब गायक स्वयं नौसिखिया था।

9. भाषा शैली संबंधी प्रश्न

प्रश्न: कविता में प्रयुक्त तारसप्तक शब्द का क्या अर्थ है? यहाँ इसका प्रयोग क्यों किया गया?

उत्तर:

- तारसप्तक संगीत में सबसे ऊँचे स्वरों का समूह होता है।
- कवि ने इस शब्द का प्रयोग मुख्य गायक की थकान को दर्शाने के लिए किया है, जब उसका गला इस उच्च स्तर पर जाने से काँपने लगता है।
- यह शारीरिक सीमाओं और कलात्मक संघर्ष का प्रतीक है।

10. तुलनात्मक प्रश्न

प्रश्न: संगतकार की भूमिका को आप समाज के किस वर्ग से तुलना कर सकते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर:

- संगतकार की भूमिका समाज के उन समर्पित लोगों से तुलनीय है जो:
 - शिक्षकों के पीछे काम करने वाले सहायक
 - नेताओं के सलाहकार
 - अस्पतालों में वरिष्ठ डॉक्टरों के साथ काम करने वाले इंटर्न
- जैसे एक नर्स डॉक्टर की सहायता करती है, वैसे ही संगतकार मुख्य गायक को संभालता है।

11. व्याख्या प्रश्न

प्रश्न: "आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ" पंक्ति में निहित भावना को समझाइए।

उत्तर:

- यहाँ राख प्रतीक है:
 - थकान की पराकाष्ठा
 - स्वर का भारीपन
 - कलाकार की निराशा

- जैसे राख झरती है, वैसे ही गायक की शक्ति क्षीण होती दिख रही है।
- यह एक मार्मिक दृश्य है जो कलाकार के संघर्ष को दिखाता है।

12. रचनात्मक प्रश्न

प्रश्न: यदि आपको इस कविता का शीर्षक बदलना हो, तो आप क्या रखेंगे और क्यों?

उत्तर:

- वैकल्पिक शीर्षक: "सहायक की महिमा"
- कारण:
 - यह शीर्षक संगतकार के योगदान को केन्द्र में रखता है
 - मूल शीर्षक से अधिक स्पष्ट संदेश देता है
 - कविता के मूल भाव को बिना बदले संक्षिप्त में व्यक्त करता है

13. मूल्यपरक प्रश्न

प्रश्न: इस कविता से हमें कौन-सा जीवन मूल्य सीखने को मिलता है?

उत्तर:

- प्रमुख जीवन मूल्य:
 1. सहयोग की भावना: सफलता अकेले नहीं मिलती
 2. विनम्रता: छोटी भूमिकाओं का भी महत्व
 3. सहनशीलता: दूसरों की कमजोरियों को समझना
 4. प्रोत्साहन: संकट में साथ देने की भावना

14. लोकजीवन संबंधी प्रश्न

प्रश्न: कविता में वर्णित संगतकार की भूमिका भारतीय लोक संगीत में कैसे दिखाई देती है?

उत्तर:

- भारतीय लोक संगीत में संगतकार:
 - हारमोनियम वादक जो मुख्य गायक का साथ देता है
 - तबला वादक जो लय बनाए रखता है

➤ सहगायक जो अंतरों में साथ देता है

- जैसे लंगा संगीत में कामयचा वादक, वैसे ही यह संगतकार मुख्य कलाकार का सहारा है।

15. काव्य सौंदर्य प्रश्न

प्रश्न: कविता में प्रयुक्त उपमा अलंकार के दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर:

1. "जैसे समेटता हो...सामान" - संगतकार की भूमिका को सामान समेटने से तुलना
2. "आवाज़ से राख जैसा..." - थके स्वर को झरती राख से उपमा

16. व्यावहारिक प्रश्न

प्रश्न: आपने अपने जीवन में किसी 'संगतकार' की भूमिका निभाई है या किसी ने आपकी? अनुभव साझा करें।

उत्तर:

(उदाहरण के लिए)

- शैक्षणिक संदर्भ: जब मैंने प्रोजेक्ट में मुख्य भूमिका निभाई, तो मेरे मित्र ने शोध सामग्री जुटाने में सहायता की
- पारिवारिक संदर्भ: बड़े भाई ने मेरे करियर निर्णयों में मार्गदर्शक की भूमिका निभाई
- इन अनुभवों से सहयोग का महत्व समझा